

वाद्य—संगीत में तबला : इतिहास, निर्माण एवं पंजाब क्षेत्र के सांगीतिक परिवेश में भूमिका**डॉ. के. माधवी**

असिस्टेंट प्रोफेसर

मंच कला विभाग

वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

मधुरेश भट्ट

शोधार्थी

मंच कला विभाग

वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सारांश (Abstract)

भारतीय संगीत परंपरा में तबला एक ऐसा वाद्य—यंत्र है जिसने शास्त्रीय, लोक, धार्मिक और आधुनिक संगीत में समान रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। यह शोध—पत्र तबले के इतिहास, निर्माण प्रक्रिया तथा विशेषकर पंजाब राज्य में इसकी भूमिका का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार तबला न केवल संगत का साधन रहा, बल्कि स्वतंत्र वाद्य के रूप में भी विकसित हुआ और आज वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति का प्रतीक बन चुका है।

परिचय (Introduction)

संगीत मानव सभ्यता की आत्मा है और वाद्य—संगीत

उसका अभिन्न हिस्सा। भारतीय संगीत प्रणाली में लय और ताल को वह स्थान प्राप्त है जो किसी भी प्रस्तुति को पूर्णता प्रदान करता है। तबला, जिसे दो अलग—अलग घटकों — दायां और बायां — से निर्मित किया जाता है, भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रमुख तालवाद्य है। इसकी थाप केवल ध्वनि नहीं, बल्कि भावनाओं और ऊर्जा का संचार करती है।

पंजाब राज्य, जो अपनी जीवंत संस्कृति, लोक—नृत्यों और धार्मिक परंपराओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है, वहाँ तबले की भूमिका बहुआयामी रही है। यह शोध—पत्र व्यवस्थित ढंग से तबले के इतिहास, निर्माण और पंजाब में इसकी महत्ता का विवेचन प्रस्तुत करता है।

समीक्षा—साहित्य (Review of Literature / Background)

भारतीय संगीतशास्त्रियों ने ताल और वाद्यों की उत्पत्ति पर व्यापक चर्चा की है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में तालवाद्यों के अनेक प्रकारों का उल्लेख मिलता है। यद्यपि तबला अपेक्षाकृत नया वाद्य है, किंतु इसके बिना भारतीय संगीत की कल्पना अधूरी है।

कई विद्वानों का मानना है कि तबला पखावज से विकसित हुआ, जबकि कुछ इसे अरब देशों के tabl (अरबी भाषा का शब्द) से जोड़ते हैं जिसका अर्थ होता है ड्रम या ढोल। पंजाब घराने के योगदान पर संगीत—विशारद डॉ. प्रेमलता शर्मा और उस्ताद लच्छू सिंह जैसे लेखकों ने विस्तार से लिखा है। किंतु पंजाब राज्य में लोक—धारा और धार्मिक जीवन में तबले की भूमिका पर अपेक्षाकृत कम शोध हुआ है। यह शोध—पत्र उस शून्य को आंशिक रूप से भरने का प्रयास करता है।

शोध—उद्देश्य (Objectives of the Research)

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1. तबले के इतिहास और विकास की पड़ताल करना।
2. तबले के निर्माण की प्रक्रिया और उसकी विशिष्टता को समझना।
3. पंजाब राज्य में तबले की शास्त्रीय, लोक, धार्मिक और सामाजिक भूमिका का विश्लेषण करना।
4. आधुनिक संगीत और वैश्विक संदर्भ में तबले की प्रासंगिकता को रेखांकित करना।

शोध—विधि (Methodology)

यह शोध—पत्र गुणात्मक (Qualitative Research Method) पर आधारित है। इसमें संगीतशास्त्रीय ग्रंथों, विद्वानों के लेखन, ऐतिहासिक साक्ष्यों और पंजाब की

सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही, मौलिक विवेचन और तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

मुख्य विवेचन (Discussion / Analysis)

1. तबले का इतिहास

तबले की उत्पत्ति 18वीं शताब्दी में मानी जाती है। सामान्य मत यह है कि पखावज को दो भागों में विभाजित करने से तबला बना। अमीर खुसरो को इसका जनक माना जाता है, यद्यपि कुछ विद्वान इसे काल-परवर्ती विकास मानते हैं।

“तबला” शब्द अरबी भाषा के tabl से आया है, जिसका अर्थ ड्रम या नगाड़ा है। धीरे-धीरे यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का अभिन्न अंग बन गया।

घरानों की परंपरा

तबला वादन की परंपराएँ घरानों में संगठित हुईं। प्रमुख घराने हैं — दिल्ली, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस और पंजाब। प्रत्येक घराने की अपनी विशिष्टताएँ हैं —

दिल्ली घराना — कोमल और संतुलित वादन

लखनऊ घराना — नृत्यात्मकता और सौंदर्य

बनारस घराना — दमदार बोल और ठुमरी संगति

पंजाब घराना — ऊर्जावान, जोशीला और द्रुत लय में दक्ष

विशेषकर पंजाब घराना तबले को स्वतंत्र वाद्य के रूप में प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है।

2. तबले का निर्माण

तबला मुख्यतः दो घटकों से निर्मित होता है — दायां (छोटा तबला) और बायां (डुग्गी या बड़ा तबला)।

दायां — लकड़ी (शीशम, सागौन) से बनी बेलनाकार देह, जिस पर चमड़ा चढ़ाया जाता है। बीच में गाब (काला चक्र) होता है, जो ध्वनि की गूँज और स्पष्टता बढ़ाता है।

बायां — प्रायः ताँबे, पीतल या मिट्टी से निर्मित, जिसकी ध्वनि गहरी और गूँजदार होती है। इसमें स्वर परिवर्तन की क्षमता अधिक होती है।

बांधाई — दोनों हिस्सों को चमड़े की पट्टियों से बाँधा जाता है, जिनमें गोठियाँ लगाकर स्वरों का समायोजन किया जाता है।

सजावट — पारंपरिक रूप से तबले को कपड़े और धागों से सजाया भी जाता है।

निर्माण की यह प्रक्रिया दर्शाती है कि तबला केवल वाद्य नहीं, बल्कि शिल्प और विज्ञान का अद्भुत संगम है।

3. पंजाब राज्य में तबले की भूमिका

(क) पंजाब घराना और शास्त्रीय परंपरा

पंजाब घराना उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित हुआ। इसकी विशेषताएँ हैं — खुले बोल, तेज़ लय और ऊर्जावान प्रस्तुति। इस घराने के उस्तादों ने तबले को शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठित करने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचाया।

(ख) लोक-संगीत में तबला

पंजाब के लोक-नृत्यों और गीतों — भांगड़ा, गिद्धा, माहिया, टप्पे — में ताल का अत्यंत महत्व है। ढोल प्रधान वाद्य अवश्य है, किंतु तबला इन धुनों को सूक्ष्म लय और संतुलन प्रदान करता है।

भांगड़ा में गति का संतुलन

गिद्धा में मधुरता की वृद्धि

लोक-गीतों में गायक और श्रोता के बीच लयात्मक पुल

(ग) धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व

गुरुद्वारों में होने वाले शबद-कीर्तन में तबला अनिवार्य वाद्य है। इसकी थाप गुरुबाणी को लयबद्ध करती है और भक्तों को भाव-विभोर करती है।

(घ) नाट्य और सामाजिक जीवन

जगराते, मेले, नाट्य-प्रस्तुतियाँ और विवाह-समारोहों में तबले की थाप उत्सव को उल्लासपूर्ण बना देती है। यह सामूहिकता और सामंजस्य की भावना को भी बढ़ाती है।

(ङ) आधुनिक संगीत और फ्यूजन

आज पंजाबी पॉप और रैप पूरे विश्व में लोकप्रिय हैं। इलेक्ट्रॉनिक संगीत और गिटार, ड्रम्स के साथ तबले का संयोजन नये प्रयोगों को जन्म देता है। यह परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का काम कर रहा है।

(च) शिक्षा और प्रशिक्षण

पंजाब के विश्वविद्यालयों और संगीत संस्थानों में तबला एक प्रमुख विषय है। यहाँ छात्र न केवल वादन कला, बल्कि अनुशासन और एकाग्रता भी सीखते हैं।

(छ) वैश्विक प्रभाव

प्रवासी पंजाबी समुदाय कनाडा, ब्रिटेन और अमेरिका में अपने कार्यक्रमों में तबले का प्रयोग करता है।

इस प्रकार तबले ने पंजाब की संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाई है।

4. आधुनिक संदर्भ और चुनौतियाँ

तबले के सामने आज कई चुनौतियाँ भी हैं — इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का बढ़ता प्रभाव, परंपरागत शिल्पकारों की संख्या घटती जाना, युवा पीढ़ी का पॉप-संगीत की ओर आकर्षण

फिर भी, प्यूजन और शैक्षणिक संस्थानों में इसकी निरंतर उपस्थिति यह दर्शाती है कि तबला भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगा।

निष्कर्ष (Conclusion)

तबला भारतीय संगीत संस्कृति का अद्वितीय वाद्य है। इसका इतिहास इसकी विकास-यात्रा को उजागर करता है, निर्माण प्रक्रिया विज्ञान और कला के संगम को दिखाती है, और पंजाब में इसकी भूमिका इस वाद्य की बहुआयामी महत्ता को प्रमाणित करती है। पंजाब में तबला केवल शास्त्रीय संगीत का अंग नहीं रहा, बल्कि लोक-जीवन, धार्मिक परंपराओं और आधुनिक संगीत का भी हिस्सा बना। इसने परंपरा और आधुनिकता को जोड़ते हुए वैश्विक पहचान हासिल की है।

अतः यह कहा जा सकता है कि तबला न केवल भारतीय संगीत की धड़कन है, बल्कि पंजाब की सांस्कृतिक आत्मा की लय भी है।

प्रमुख सन्दर्भ (References)

1. मिश्री, ए. ई. (1999). पखावज और तबला : इतिहास, स्कूल और परंपराएँ. नई दिल्ली.
2. हुसैन, जु., तलुकदार, दे. (2023). तबला — ए क्वेस्ट (सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक मार्गदर्शिका), भाग 1. नई दिल्ली.
3. शेफर्ड, फ्रांसेस ए. (1976). तबला और बनारस घराना. वेस्लेयन यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. घोष, अ. (2024). फर्रुखाबाद घराने का तबला. नई दिल्ली.

5. प्रसाद, र. (2002). भारतीय संगीत वाद्ययंत्र. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, लोकोदय ग्रंथमाला श्रृंखला (वॉल्यूम क्र.-346).
6. चटर्जी, स. ए स्टडी ऑफ तबला. न्यूयॉर्क: छंदायन सेंटर.
7. दीप, प्र. (2020). तबले की बंदिशें : तीन ताल में लयबद्ध रचनाओं का संकलन. नई दिल्ली: कानीष्क पब्लिशिंग हाउस / ओम पब्लिकेशन्स.
8. मिश्र, छोटे लाल. (2007). तबले की वादन तकनीक : बनारस घराना. नई दिल्ली: कानीष्क पब्लिशर्स.
9. नैमपल्ली, स. (2006). तबले का सिद्धांत और व्यवहार. मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन.
10. सक्सेना, सु. कु. (2008). तबला ताल की कला : मूलभूत सिद्धांत, परंपरा और रचनात्मकता. नई दिल्ली: डी.के. प्रिंटवर्ल्ड प्रा. लि.

ऑनलाइन (Online) स्रोत

1. The Times of India. (2024, मार्च 1). *तबला: भारतीय तालवाद्य का आधारस्तंभ और इसके घराने*. द टाइम्स ऑफ़ इंडिया.
2. The Indian Express. (2025, जनवरी 12). *तबले का विकास और इसके विभिन्न घराने*. द इंडियन एक्सप्रेस.
3. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय. (n.d.). *तबला — ऐतिहासिक पृष्ठभूमि*.
4. Hindustani Classical. (n.d.). *तबले की उत्पत्ति*.
5. भारतकोश. (n.d.). *तबला*. भारत डिस्कवरी / भारतकोश.